अ:कार (aḥ-kāra) *m.* the letter or the sound अ:, used as the name or indication of the Nom. Case. अ:कार आगमविकारिलोपिनाम् TaiPrāti. 1. 23 (comm. अ:कार इति प्रथमाया उपलक्षणत्वात्, Tribhāṣya. प्रथमाविभक्तेरुपलक्षणम्); अ[:]कार: परमेश्वर: JayāS. 6. 40; PāraS. 15. 532; LakṣmīT. 25. 10; अ:कारान्ता अकाराद्या मनवस्ते चतुर्दश SkandP. i (2). 5. 71; अ[:]काराद्यास्त्वकारान्ताविलोमं षोडश स्वरा: ĪśānS'iPa. ii. 1. 142.

[1]**अक्** (ak-) I. P. [अक–अग कुटिलायां गतौ DhātuPā. 1. 829; DhātuPra. 1. 796 (अकति); DhātuVṛ. gives the forms अकति, आक, अकिता, अकीत्, अचिकिषति, अकयति, अचकत्, आकि, अकि 1. 780; अक्म वक्रगते KaviKaDru. 80; कुटिलायां गतावकेत् DaivaVyā. 41; अक् अग कुटिलायां गतौ, भ्वादि: परस्मैपदी KāvyKaVṛ. 86. 15 (3. 5); 93. 6; KośaKaTa. 2. 1335] to move tortuously, to move with a zig-zag course अकति कुटिलं चरतीति अक: AlaṅkāCin. 22. 18; काक ईषदकति कुटिलं गच्छति यो निर्भयत्वात् comm. *on* HarVi. 43. 288.

[2]**अक्** (ak) a grammatical abbreviation called a प्रत्याहार standing for the vowels a, i, u, ṛ and ḷ of Sanskrit, based on the two S'ivSū.(Gr.) 1, 2 and formed according to P. i. 1. 71; vi. 1. 101; vi. 1. 128; अक: सवर्णदीर्घत्वं परयोरन्तरङ्गत: TantrVā. 102. 7 (*on* i. 3. 3); AgniP. 348. 3; JaineVyā. iv. 3. 88; iv. 3. 105; CāndraVyā. v. i. 106; v. 1. 133; S'ākaṭāVyā. i. 1. 75; iv. 2. 61; MugdhaBo. 1. 4 (1. 16); 2. 24 (6. 15); PrakriKau. i. 67. 5; i. 125. 2; PariVṛ.(Sī.) 154. 6.

[3]**अक्** (a-k) a grammatical term denoting the absence of the sound *k* in the suffix *akac* (P. v. 3. 71); used in P. vi. 1. 132; vii. 1. 11; vii. 2. 112; JaineVyā. iv. 3. 109; v. 1. 170; CāndraVyā. v. 4. 74; S'ākaṭāVyā. i. 2. 206; in the suffixes *kvasu* and *kān* SiddhaHe. iv. 3. 8.

[4]**अक्** (ak) **i** Kātyāyana's suggetion for Pāṇini's *aṅ* to avoid *guṇa* in the precative form दृशेयम् Vār. 2 *on* P. iii. 1. 86; अङि हि सति ऋदृशोऽङि गुण इति गुण: स्यात्...अकि तु सति कित्त्वाद् गुणाभावो भवति Nyās. 1. 554 (*on* P. iii. 1. 86); **ii** for *a* in गेहे क्क् Kātan. iv. 2. 60.

[5]**अक्** (ak) **i** a formant postulated by grammarians to explain some derivatives like उच्चकै:, नीचकै:, शनकै:, सर्वके, विश्वके, पृथकद् (P. v. 3. 71–72), called अकच् (s. v) [a *ka*-extension of pronominal forms]; **ii** सौधातकि: called अकङ् (P. v. 1. 97), Kātan. ii. 2. 64; JaineVyā. 9. 33 (*on* i. 1. 38); 262. 8 (iv. 1. 130); S'ākaṭāVyā. i. 2. 213; SiddhaHe. i. 4. 3; ii. 1. 44; vii. 3. 29; MugdhaBo. 2. 55 (10. 11); 3. 131(30. 6)

[1]**अक** (áka) *n.* [IE *aq- MAYR. later split into *a-ka* with a new word meaning 'good' and also seen in *nāka* (*na-aka*) heaven] **1** unhappiness, misery, pain, trouble, suffering यस्यैता उपधीयन्ते नास्मा अकं भवति TaiS. v. iii. 7. 1; यत्प्रयाजेष्वनिष्टेषु प्राङ्ङार[:] स्कन्देत्...यजमानाय चाकं स्यात् KapiKaS. 48. 16; न वै तत्र जग्मुषे किंचनाकम् PañcBr. xxi. 8. 4; तमु नाक इत्याहुर्न हि प्रजापति: कस्मैचनाकम् PañcBr. x. 1. 18; यत्पुरा प्रयाजेभ्य: प्राङ्ङार: स्कन्देत् । अध्वर्यवे च यजमानाय चाकं स्यात् TaiBr. III. vii. 2. 6; यदब्रवीन् न वै म इदम् अकम् अभूदिति तन् नाकस्य नाकत्वम् JaimiBr. 3. 345; कमिति सुखनाम । तत्प्रतिषिद्धं प्रतिषिध्येत । न वा अमुं लोकं जग्मुषे किं च नाकम् । न वा अमुं लोकं जग्मुषे किं च नासुखम् । पुण्यकृतो ह्येव तत्र गच्छन्ति Nir. 2.14; कमिति सुखनाम तस्य निषेध: अकम् असुखं तत्र इति नाकम् MāṭhVṛ. 6. 20 (*on* 2); त्वां...परमकमितारं परमकमितारं वाञ्छति VāsaDa. 213. 3; न कमकं दु:खम् Nyās. 2. 467 (*on* vi. 3. 75); कमिति सुखं तस्य प्रतिषेधोऽकम् ChāndoUBh. 103. 6 (*on* ii. 10. 5); अकं ब्रह्मभिन्नतया प्रतीयमानं दु:खात्मकं जगत् LalitāTriBh. 280. 3 (*on* 14); (वनम्) अकविलोकगणनमपि सकालिदासम् YaśasCam. ii. 196. 1; ब्रह्मणश्च परेषां वा नाशय त्वमकं महत् S'ivaP. ii. (3). 4. 14 (127A. 8); दुर्लभत्वं सदाकस्य सुकृते न च वस्तुन: SkandP. iv. 24. 17; न कन्दरस्थस्य दिशत्यकं दर: Yādavā. 6. 33; the Kośas give the meaning दु:ख, क्लेश, शोक AnekāSaṁ. 2. 1; TrikāS'e. i. 9. 1; ViśvaPra. 4. 25; AnekāTi 2. 6; MediK. 2. 16; NānārthaMa. 72; NānārthaRaMā. 198; KalpaK. 367. 3; KośaKaTa. 1. 120; 2. 3288; ViśvaLoK. 2. 4; S'abdaRaSaK. 3. 1; **2** sin (mostly L.) सा रसवत्ता विहता नवका विलसन्ति चरति नोऽकं क: VāsaDa. 7. 3; अप्रियं वृजिनं दु:खमकं तोद इतीर्यते AnuVyā. 54B. 6 (*on* 3. 4); अकं पापादौ KāvyKaVṛ. 86. 18 (3. 5); (पराकाशा) परे...अके पापदु:खे अश्नाति नाशयतीति LalitāSaBh. 158. 14 (*on* 200); the Kośas translate with अघ, पाप, दुरित cf. under **1**; **3** (L.) a mountain (अद्रि) NānārthaMa. 72; NānārthaRaMā. 198.

[2]**अक** (a-ka) *adj.* without the head, headless trunk काकी काकोऽककाकया HarVi. 43. 288 (comm. नास्ति कं शिरो येषां तेऽका: शिरश्छिन्ना वराकत्वात्काका इव काका रिपवो यस्याम्)

[3]**अक** (a-ka) *adj.* [*ka* is taken to stand for *kutsita* the base of the pronoun *kim* cf. *kāpuruṣa*, *kadanna* etc.] not wretched, (*hence*) good; possessing good marks सालानकमनालानम् ... अदन्तं च पश्यैनमगजं गजम् NalaCam. 6. 57 (comm. सालांस्तरूनदन्तम् । तथा अकमकुत्सितम् सर्वलक्षणपरिपूर्णम्); अस्ति खलु...अकारणरोषप्रमत्तोऽपि नि:शेषशिष्टाचारप्रवृत्त: सुदत्तो नाम राजा YaśasCam. ii. 236. 2 (comm. अक: अकुत्सित: आ समन्तात् योऽसौ रणरोष:)

[4]**अक** (a-ka) *adj.* [*ka* in the sense of water for *śleṣa*] without water वयमिह बहुशोकं दृष्टवन्तो वनान्ते त्वदरियुवतिलोकं ग्रीष्ममासे सरश्च NalaCam. 5. 9 (comm. बहुश इति क्रियाविशेषणम्); शुचि कीदृग्भ्रम् (अकम्) VidaMuMa. 2. 69.

[5]**अक** (ak-a) *adj.* moving tortuously, moving zig-zag कुकुदी दकदूदोऽकोऽकूदकौका: कदैकक: (खगाधिप:) HarVi. 43. 349 (comm. अक: कुटिलगामी); अकके मोहो नष्ट: AlaṅkāCfn. 22. 18 (comm. अकति कुटिलं चरतीति अक: स चासौ कश्च ब्रह्मा तस्मिन्)

[6]**अक** (aka) a formant which produces primary and secondary derivatives, given by Pāṇini with the technical suffixes ण्वुल्, वुञ्, वुन्, ष्वुन्, ण्वुच्, वुच्, इवुन्, वुक् (s. v.)P. vii. 1. 1; CāndraVyā. v. 4. 1; JaineVyā. v. 1. 1; S'ākaṭāVyā. ii. 3. 34; Kātan. iv. 6. 54; is used for some of them in P. ii. 2. 15; JaineVyā. i. 3. 78; SaraKaṇṭhā.(Gr.) iii. 2. 142; P. ii. 3. 70; JaineVyā. i. 4. 73; P. iv. 2. 141; vi. 2. 73; तृच् क्रीडाजीविकयोर्नास्तीये(? त्य)क एवोदाह्रियते KāśiVṛ. *on* ii. 2. 17; अकतद्धिताभ्यां कोपधाया: पुंवत्वनिषेधोऽत्र PrakriKau. i. 589. 3; अकस्याधमर्ण्येऽसंभवादाह भविष्यत्यकस्येति LaS'abdeS'e. i. 515. 12; other grammarians often use अक as the suffix in place of the technical terms of P. आशिष्यक: Kātan. iv. 2. 65=P. वुन् iii. 1. 150; S'ākaṭāVyā. iii. 1. 107 = SiddhaHe. vi. 3. 114 = P. वुन् iv. 3. 48; S'ākaṭāVyā. ii. 3. 80=P. वुञ् iv. 3. 39; S'ākaṭāVyā. iii. 1. 83=P. वुन् v. 2. 63; SiddhaHe. v. 1. 69=P. वुन् iii. 1. 149; SiddhaHe. vi. 2. 126 = P. वुन् iv. 2. 61; SiddhaHe. vi. 3. 207=P. वुन् iv. 3. 98; SiddhaHe. vi. 3. 102=P. वुञ् iv. 3. 28; SiddhaHe. ii. 4. 94=P. वुञ् iv. 2. 39; SiddhaHe. vi. 3. 96=P. वुन् v. 2. 63; SiddhaHe. vii. 3. 36=P. वुच् v. 3. 80; MugdhaBo. 26. 41 (153. 17) = P. वुन् iii. 1. 149; अकेन च न कुर्वीत वृत्तिं तद्गमको यथा Kāvyālaṅ.(Bh.) 6. 37; काक: शब्द:...तं करोतीति णिचि तदन्तादके च काकक: Kāvyānu.(He.) 260. 3; पाकं हि पचिरेवाह कर्तारं प्रत्ययोऽप्यक: S'āstrDī. 247. 16 (*on* iii. 3. 7)

[7]**अक** (a-ka) without the sound *k* एत्यक: SiddhaHe. ii. 3. 26 (comm. कवर्जात्नाम्यादे: परस्य स एति परे समासे ष् स्यात् नाम्नि । हरिषेण: । अक इति किम् । विष्वक्सेन:)

अकंसमदभञ्जन (a-kaṁsamadabhañjana) *adj.* who has not destroyed or smashed Kaṁsa's pride or arrogance अशौरिकुलपावनान्...अकरनीतगोवर्धनान् । अकंसमदभञ्जनान्...अलमुपास्य वृन्दारकान् YātrāPra. 7. 116.

[1]**अकक** (aka-ka) *m.* the crooked Brahmā i. e. Brahmā whose ways are incomprehensible कीदृक्षो बहु शस्यते...कीदृग् दरिद्रो वद । अनयोऽकुप्यदशय: अकके(ऽ)मोहो(ऽ)नष्टो(ऽ)मियो(ऽ)माय: ... अकति कुटिलं चरतीति अक: स चासौ कश्च ब्रह्मा तस्मिन् AlaṅkāCin. 22. 18.

[2]**अकक** (a-kaka) *adj.* free from cupidity अकके मोहो नष्ट: AlaṅkāCin. 22. 18 (comm. कको तौल्यं (? लौल्यं) न यस्यासौ अकको मुनिस्तस्मिन्)

अककमल (aka-kamala) *n.* a land lotus श्लेषो भवति यथा अककमलशाली, पक्षे मलशाली KāvyKaVṛ. 53. 6 (3. 1)

अककार (a-kakāra) *adj.* not having the sound *k* (as in the secondary suffix *ak* (*akac*)) appended to it एतत्तदोरककारयोरनञ्समासे [सो:] लोप: स्याद्धलि PrakriKau. i. 114. 4; अककारयोरेतत्तदोर्य: सुस्तस्य लोप: स्याद्धलि न तु नञ्समासे SiddhāKau. 39A. 2; अककारस्य इदम इदोऽन् स्यादापि विभक्तौ PrakriKau. i. 220. 3; SiddhāKau. 81B. 3; अककारस्य इदम इदो लोप: स्यादापि हलादौ PrakriKau. i. 220. 5; SiddhāKau. 81B. 6.

अककारपूर्व (a-kakārapūrva) *adj.* not preceded by the sound *k* ऋकाररेफषकारा नकारं समानपदेऽवगृह्ये नमन्ति । अन्त:पदस्थमककारपूर्वा अपि संध्या: संध्य ऊष्माप्यनिङ्गे ṚPrāti. 5. 20.

अकङ् (akaṅ) the substitute *ak* **i** enjoined by P. iv. 1. 97 सुधातुरकङ् च to explain the form सौधातकि; Vār. 1 extends it to व्यास and Pat. to वरुड, निषाद, चण्डाल and बिम्ब but correctly points out that it is a *ka*-extension; के पुना रीरिविधय: । अकङ्लोपानङ्नङ्रीङ्रिङादेशा: MahāBh. i. 126. 24 (*on* i. 1. 51); JaineVyā. iii. 1. 86 (165. 12); व्यासादीनामकङ् च CāndraVyā. ii. 4. 21; S'ākaṭāVyā. ii. 4. 27; PrakriKau. i. 704. 2 (*on* iv. 1. 97); **ii** युष्मदस्मदोऽकङ् खञ् JaineVyā. iii. 2. 121 (192. 23) for which P. sets up the bases युष्माक, अस्माक iv. 3. 2.

अकङ्कण (a-kaṅkaṇa) *adj.* having no bangles अकङ्कणमकेयूरमनूपुरममे-